अध्याय 1: माँ, कह एक कहानी

विषय-सूची 10 प्रश्नावली · 19 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1	मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न)	3 प्रश्न
प्रश्नावली 1.2	मिलकर करें मिलान (पात्र पहचान)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 1.3	पंक्तियों पर चर्चा	2 प्रश्न
प्रश्नावली 1.4	सोच-विचार के लिए	5 प्रश्न
प्रश्नावली 1.5	संवाद (कथन-वर्गीकरण)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 1.6	शब्द से जुड़े शब्द (प्रकृति-शब्द)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 1.7	पंक्ति से पंक्ति (अर्थ-मिलान)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 1.8	कविता की रचना (विशेषता-मिलान)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 1.9	कविता में विराम चिह्न	1 प्रश्न
प्रश्नावली 1.10	आज की पहेली	3 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1 — मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1

माँ अपने बेटे को करुणा और न्याय की कहानी क्यों सुनाती है? (क) राजाओं की कहानियों से उसका मनोरंजन करने के लिए। (ख) उसमें सही और गलत की समझ विकसित करने के लिए। (ग) उसे परिवार की विरासत और पूर्वजों के बारे में बताने के लिए। (घ) उसे प्रकृति और जानवरों के बारे में जानकारी देने के लिए।

हल

माँ (यशोधरा) अपने पुत्र राहुल को उसके पिता (सिद्धार्थ/गौतम बुद्ध) की घायल हंस वाली कहानी सुनाती है।
कहानी में माँ अंत तक निर्णय स्वयं नहीं सुनाती — 'राहुल, तू निर्णय कर इसका' कहकर बेटे को सोचने पर विवश करती है।
इससे स्पष्ट है कि माँ का उद्देश्य बेटे में सही-गलत की पहचान और नैतिक समझ विकसित करना है।
सही उत्तर: (ख) उसमें सही और गलत की समझ विकसित करने के लिए।

उत्तर: (ख) उसमें सही और गलत की समझ विकसित करने के लिए।

प्रश्न 2

कविता में घायल पक्षी की कहानी का उपयोग किस लिए किया गया है? (क) निर्दोष पक्षी के प्रति आखेटक की क्रूरता दिखाने के लिए। (ख) पिता की वीरता और साहस पर ध्यान दिलाने के लिए। (ग) करुणा और हिंसा के बीच के संघर्ष को दिखाने के लिए। (घ) मित्रता और निष्ठा के महत्व को उजागर करने के लिए।

हल

कविता में आखेटक ने हंस को तीर से घायल किया — यह हिंसा का प्रतीक है।
सिद्धार्थ (तात) ने करुणावश उस हंस को उठाया — यह करुणा का प्रतीक है।
दोनों के बीच विवाद हुआ और मामला न्यायालय तक गया — यह करुणा बनाम हिंसा के संघर्ष को दर्शाता है।
कविता का संदेश है कि न्याय दया का दानी होता है — अर्थात् करुणा और न्याय साथ चलते हैं।
सही उत्तर: (ग) करुणा और हिंसा के बीच के संघर्ष को दिखाने के लिए।

उत्तर: (ग) करुणा और हिंसा के बीच के संघर्ष को दिखाने के लिए।

प्रश्न 3

कविता के अंत तक पहुँचते-पहुँचते बच्चे को क्या समझ में आने लगता है? (क) न्याय सदैव करुणा के साथ होना चाहिए। (ख) निर्णय लेते समय सदैव निडर रहना चाहिए। (ग) आखेटकों का सदैव विरोध करना चाहिए। (घ) जानवरों की हर स्थिति में रक्षा करनी चाहिए।

हल

राहुल कहानी के अंत में स्वयं बोलता है — 'कोई निरपराध को मारे, तो क्यों अन्य उसे न उबारे?'
वह यह भी कहता है — 'रक्षक पर भ्रमक को वारे, न्याय दया का दानी!'
इन पंक्तियों में स्पष्ट है कि बच्चे को समझ आया कि न्याय में करुणा अनिवार्य रूप से शामिल होनी चाहिए।
सही उत्तर: (क) न्याय सदैव करुणा के साथ होना चाहिए।

उत्तर: (क) न्याय सदैव करुणा के साथ होना चाहिए।

प्रश्नावली 1.2 — मिलकर करें मिलान (पात्र पहचान)

प्रश्न 1

नीचे दिए गए पात्रों और उनके परिचय को सुमेलित कीजिए: पात्र: 1. बेटा 2. माँ 3. तात (पिता) ये शब्द किनके लिए आए हैं: 1. यशोधरा, एक राजकुमारी, सिद्धार्थ की पत्नी 2. सिद्धार्थ, एक राजकुमार जो बाद में गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए 3. सिद्धार्थ और यशोधरा के पुत्र राहुल

हल

पात्र 'बेटा' = सिद्धार्थ और यशोधरा के पुत्र राहुल (विकल्प 3)
पात्र 'माँ' = यशोधरा, एक राजकुमारी, सिद्धार्थ की पत्नी (विकल्प 1)
पात्र 'तात (पिता)' = सिद्धार्थ, एक राजकुमार जो बाद में गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए (विकल्प 2)
यह कविता मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-कृति 'यशोधरा' से ली गई है जिसमें माँ यशोधरा पुत्र राहुल को पिता सिद्धार्थ (बुद्ध) की कहानी सुनाती हैं।

उत्तर: बेटा → राहुल (3); माँ → यशोधरा (1); तात (पिता) → सिद्धार्थ/गौतम बुद्ध (2)

प्रश्नावली 1.3 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

(क) नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ बताइए— "कोई निरपराध को मारे, तो क्यों अन्य उसे न उबारे? रक्षक पर भ्रमक को वारे, न्याय दया का दानी!"

हल

ये पंक्तियाँ कविता के अंत में राहुल के मुख से निकली हैं — वह स्वयं न्याय का निर्णय सुना रहा है।
'कोई निरपराध को मारे' — यदि कोई बिना कसूर के किसी को चोट पहुँचाए (जैसे आखेटक ने निर्दोष हंस को तीर मारा),
'तो क्यों अन्य उसे न उबारे?' — तो दूसरे को उस निर्दोष की रक्षा करने से क्यों रोका जाए? अर्थात् दूसरों को बचाव करने का पूरा अधिकार है।
'रक्षक पर भ्रमक को वारे' — जो व्यक्ति रक्षा करे (सिद्धार्थ) उसकी जीत होनी चाहिए, न कि उसे दोषी ठहराया जाए।
'न्याय दया का दानी!' — सच्चा न्याय वही है जो दया और करुणा से युक्त हो; न्याय करते समय कमजोर और निर्दोष पक्ष की रक्षा होनी चाहिए।
इन पंक्तियों का केंद्रीय भाव है — न्याय और करुणा एक-दूसरे के पूरक हैं।

उत्तर: इन पंक्तियों में बालक राहुल यह निर्णय सुनाता है कि निर्दोष की रक्षा करना न्याय है और सच्चा न्याय दया/करुणा से अलग नहीं होता।

प्रश्न 2

(ख) नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ बताइए— "हुआ विवाद सदय-निर्दय में, उभय आग्रही थे स्वविषय में, गई बात तब न्यायालय में, सुनी सभी ने जानी।"

हल

'सदय-निर्दय में' — दयालु (सिद्धार्थ) और निर्दय (आखेटक) के बीच विवाद हुआ।
'उभय आग्रही थे स्वविषय में' — दोनों ही अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे; सिद्धार्थ घायल हंस को देने से इनकार कर रहे थे और आखेटक उसे माँग रहा था।
'गई बात तब न्यायालय में' — जब दोनों के बीच कोई सहमति नहीं बनी तो मामला न्यायालय में ले जाया गया।
'सुनी सभी ने जानी' — यह विवाद इतना चर्चित हो गया कि सभी ने इसके बारे में सुना और जाना।
इन पंक्तियों से पता चलता है कि करुणा और क्रूरता के संघर्ष का निपटारा अंततः न्यायालय में हुआ जो समाज की दृष्टि में एक महत्वपूर्ण घटना बन गई।

उत्तर: इन पंक्तियों में दयालु सिद्धार्थ और निर्दय आखेटक के बीच हुए विवाद का वर्णन है जो न्यायालय तक पहुँचा और सार्वजनिक चर्चा का विषय बना।

प्रश्नावली 1.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

(क) आपके विचार से इस कविता में कौन-सी पंक्ति सबसे महत्वपूर्ण है? आप उसे ही सबसे महत्वपूर्ण क्यों मानते हैं?

हल

कविता की सबसे महत्वपूर्ण पंक्ति है: 'न्याय दया का दानी!'
यह पंक्ति सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पूरी कविता का केंद्रीय संदेश है।
कविता में माँ ने जो लंबी कहानी सुनाई — उसका सार इसी एक पंक्ति में है।
यह पंक्ति यह बताती है कि सच्चा न्याय वही होता है जिसमें कमजोर और निर्दोष के प्रति दया की भावना हो।
इसीलिए माँ ने 'न्याय दया का दानी' सुनकर कहा — 'तूने गुनी कहानी' अर्थात् बेटे ने कहानी का सही सार समझ लिया।

उत्तर: 'न्याय दया का दानी!' — यह पंक्ति पूरी कविता का केंद्रीय संदेश है; इसी में बालक राहुल की नैतिक समझ और माँ की शिक्षा का सार समाहित है।

प्रश्न 2

(ख) आखेटक और बच्चे के पिता के बीच तर्क-वितर्क क्यों हुआ था?

हल

आखेटक (शिकारी) ने एक हंस को तीर से घायल किया था।
बच्चे के पिता (सिद्धार्थ) ने करुणावश उस घायल हंस को उठाकर उसकी सेवा-शुश्रूषा की।
जब आखेटक वहाँ आया और उसने अपना शिकार माँगा तो सिद्धार्थ ने उसे देने से इनकार कर दिया।
सिद्धार्थ का तर्क था: 'पक्षी पर मैंने जीवन-दान किया, इसलिए इसका अधिकार मुझे है।'
आखेटक का तर्क था: 'मैंने तीर मारा, अतः यह मेरा शिकार है।'
दोनों अपनी-अपनी बात पर अडिग रहे ('उभय आग्रही थे स्वविषय में'), इसीलिए विवाद हुआ जो न्यायालय तक गया।

उत्तर: आखेटक ने घायल हंस को अपना शिकार बताकर माँगा, जबकि सिद्धार्थ ने उस पक्षी की प्राण-रक्षा की थी और उसे देने से इनकार किया — इस अधिकार-विवाद पर ही तर्क-वितर्क हुआ।

प्रश्न 3

(ग) माँ ने पुत्र से 'राहुल, तू निर्णय कर इसका' क्यों कहा?

हल

माँ (यशोधरा) एक कुशल और समझदार माँ है।
वह चाहती थी कि राहुल केवल कहानी सुनकर मनोरंजन न करे, बल्कि उसमें सही-गलत की स्वतंत्र समझ विकसित हो।
माँ ने सोच-समझकर कहानी बीच में छोड़ी और बेटे से निर्णय माँगा — इससे बेटे की तार्किक सोच और नैतिक

चिंतन को प्रोत्साहन मिला।
यह शिक्षा-पद्धति 'बताओ नहीं, सोचने दो' पर आधारित है जो बच्चे में आत्म-विश्वास और विवेक जगाती है।
माँ जानती थी कि राहुल समझदार है और उचित निर्णय लेने में सक्षम है।

उत्तर: माँ चाहती थी कि राहुल स्वयं सोचकर निर्णय तक पहुँचे, जिससे उसकी नैतिक समझ और विवेक-शक्ति का विकास हो — वह बेटे को सिखाना चाहती थी, केवल मनोरंजन नहीं करना चाहती थी।

प्रश्न 4

(घ) यदि कहानी में आप उपवन में होते तो घायल हंस की सहायता के लिए क्या करते? आपके अनुसार न्याय कैसे किया जा सकता था?

हल

यदि मैं उस उपवन में होता तो सबसे पहले घायल हंस का उपचार करता।
इसके बाद आखेटक और सिद्धार्थ दोनों की बात ध्यान से सुनता।
न्याय यह होता कि: घायल और निर्दोष पक्षी की जान बचाना सर्वोपरि है; जो व्यक्ति जीव की रक्षा करे उसका पक्ष न्यायसंगत है।
आखेटक को यह समझाया जाता कि निर्दोष प्राणी को बिना कारण मारना अनुचित है।
अंततः हंस को उस व्यक्ति के पास रहने देना न्यायोचित होता जिसने उसकी जान बचाई — क्योंकि 'न्याय दया का दानी' होता है।

उत्तर: घायल हंस का उपचार करना और उसे उसी के पास रहने देना न्यायोचित होता जिसने प्राण-रक्षा की, क्योंकि निर्दोष की रक्षा करना सबसे बड़ा न्याय है।

प्रश्न 5

(ङ) कविता में माँ और बेटे के बीच बातचीत से उनके बारे में क्या-क्या पता चलता है?

हल

माँ (यशोधरा) के बारे में: वह बुद्धिमान और संवेदनशील माँ है जो बेटे को कहानी के माध्यम से नैतिक शिक्षा देती है।
माँ कहानी को बीच में छोड़कर बेटे से निर्णय माँगती है — यह उसकी शिक्षाप्रद और समझदार प्रकृति दर्शाता है।
माँ स्नेहिल है — वह लेटी-लेटी भी बेटे की हठ पूरी करती है।
बेटे (राहुल) के बारे में: वह जिज्ञासु और हठी है — बार-बार 'माँ, कह एक कहानी' कहकर माँ को प्रेरित करता है।
वह समझदार और संवेदनशील है — कहानी के प्रत्येक मोड़ पर प्रतिक्रिया देता है जैसे 'करुणा-भरी कहानी', 'कोमल-कठिन कहानी'।
अंत में वह स्वयं न्याय का निर्णय बोलता है — यह उसकी परिपक्व नैतिक सोच दर्शाता है।
दोनों के बीच गहरा प्रेम और विश्वास का संबंध है जो संवाद के हर मोड़ पर झलकता है।

उत्तर: माँ बुद्धिमान, स्नेहिल और शिक्षाप्रद है; बेटा जिज्ञासु, हठी, संवेदनशील और नैतिक रूप से परिपक्व है — दोनों के बीच प्रेम और विश्वास का गहरा रिश्ता है।

प्रश्नावली 1.5 — संवाद (कथन-वर्गीकरण)

प्रश्न 1

इस कविता में माँ और पुत्र का संवाद दिया गया है लेकिन कौन-सा कथन किसने कहा है, यह नहीं बताया गया है। कविता में दिए गए संवादों को पहचानिए कि कौन-सा कथन किसने कहा है और उसे दिए गए उचित स्थान पर लिखिए। उदाहरण: पुत्र द्वारा कहे गए कथन: "माँ, कह एक कहानी।" माँ द्वारा कहे गए कथन: "बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी?"

हल

माँ द्वारा कहे गए कथन:

1. 'बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी?'
2. 'तू है हठी मानधन मेरे, सुन, उपवन में बड़े सबेरे, तात भ्रमण करते थे तेरे, जहाँ, सुरभि मनमानी।'
3. 'वर्ण वर्ण के फूल खिले थे, झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे, हलके झोंके हिले-मिले थे, लहराता था पानी।'
4. 'गाते थे खग कल कल स्वर से, सहसा एक हंस ऊपर से, गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से, हुई पक्षी की हानी!'
5. 'चौंक उन्होंने उसे उठाया, नया जन्म-सा उसने पाया। इतने में आखेटक आया, लक्ष्य-सिद्धि का मानी।'
6. 'माँगा उसने आहत पक्षी, तेरे तात किंतु थे रक्षी। तब उसने, जो था खगभ्रमी — हठ करने की ठानी।'
7. 'हुआ विवाद सदय-निर्दय में, उभय आग्रही थे स्वविषय में, गई बात तब न्यायालय में, सुनी सभी ने जानी।'
8. 'राहुल, तू निर्णय कर इसका — न्याय पक्ष लेता है किसका? कह दे निर्भय, जय हो जिसका। सुन लूँ तेरी बानी।'
9. 'न्याय दया का दानी? तूने गुनी कहानी।' (माँ द्वारा राहुल का उत्तर सुनकर)

पुत्र (राहुल) द्वारा कहे गए कथन:

1. 'माँ, कह एक कहानी।'
2. 'कहती है मुझसे यह चेटी, तू मेरी नानी की बेटी! कह माँ, कह, लेटी ही लेटी, राजा था या रानी?'
3. 'जहाँ सुरभि मनमानी? हाँ, माँ, यही कहानी।'
4. 'लहराता था पानी? हाँ, हाँ, यही कहानी।'
5. 'हुई पक्षी की हानी? करुणा-भरी कहानी!'
6. 'लक्ष्य-सिद्धि का मानी? कोमल-कठिन कहानी।'
7. 'हठ करने की ठानी? अब बढ़ चली कहानी।'
8. 'सुनी सभी ने जानी? व्यापक हुई कहानी।'
9. 'माँ, मेरी क्या बानी? मैं सुन रहा कहानी। कोई निरपराध को मारे, तो क्यों अन्य उसे न उबारे? रक्षक पर भ्रमक को वारे, न्याय दया का दानी!'

उत्तर: माँ के कथन: कहानी सुनाने वाले सभी श्लोक (भ्रमण, फूल, हंस, आखेटक, विवाद, निर्णय माँगना); पुत्र के कथन: प्रत्येक श्लोक के बाद की प्रतिक्रिया पंक्तियाँ और अंत में 'न्याय दया का दानी!'।

प्रश्नावली 1.6 — शब्द से जुड़े शब्द (प्रकृति-शब्द)

प्रश्न 1

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में प्रकृति से जुड़े शब्द कविता में से चुनकर लिखिए। केंद्र में 'प्रकृति' है और एक उदाहरण 'उपवन' दिया गया है।

हल

कविता में प्रकृति से जुड़े निम्नलिखित शब्द हैं:

1. उपवन — बगीचा/वन-क्षेत्र जहाँ सिद्धार्थ भ्रमण करते थे
2. फूल — 'वर्ण वर्ण के फूल खिले थे'
3. हिम-बिंदु — ओस की बूँदें — 'झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे'
4. पानी — 'लहराता था पानी'
5. खग — पक्षी — 'गाते थे खग कल कल स्वर से'
6. हंस — जल-पक्षी — 'सहसा एक हंस ऊपर से'
7. झोंके — हवा के हलके झोंके — 'हलके झोंके हिले-मिले थे'

उत्तर: प्रकृति से जुड़े शब्द: उपवन, फूल (वर्ण-वर्ण के), हिम-बिंदु, पानी, खग, हंस, झोंके

प्रश्नावली 1.7 — पंक्ति से पंक्ति (अर्थ-मिलान)

प्रश्न 1

नीचे स्तंभ 1 और स्तंभ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलती-जुलती पंक्तियों को रेखा खींचकर मिलाइए— स्तंभ 1: 1. कहती है मुझसे यह चेटी 2. तू है हठी मानधन मेरे 3. झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे 4. गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से 5. हुआ विवाद सदय-निर्दय में 6. कह दे निर्भय, जय हो जिसका। 7. तूने गुनी कहानी। 8. उभय आग्रही थे स्वविषय में 9. तब उसने, जो था खगभ्रमी — हठ करने की ठानी। 10. रक्षक पर भ्रमक को वारे न्याय दया का दानी! स्तंभ 2: 1. दोनों ही अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे। 2. तू बिना डरे कह दे कि जीत किसकी होनी चाहिए। 3. दयालु और निर्दयी व्यक्ति में झगड़ा हुआ। 4. न्याय में दया सम्मिलित होती है, न्याय मारने वाले के स्थान पर बचाने वाले का पक्ष लेता है। 5. हिम-कण/ओस की बूँदें झिलमिला रही थीं। 6. तूने कहानी को समझ लिया है। 7. यह सेविका मुझसे यह कहती है। 8. तेज धार वाले तीर से घायल होकर गिर गया। 9. हे मेरे पुत्र, तू बहुत हठ करता है। 10. तब उस तीर चलाने वाले ने हठ करने का निश्चय कर लिया।

हल

1. 'कहती है मुझसे यह चेटी' → 7. 'यह सेविका मुझसे यह कहती है।'
2. 'तू है हठी मानधन मेरे' → 9. 'हे मेरे पुत्र, तू बहुत हठ करता है।'
3. 'झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे' → 5. 'हिम-कण/ओस की बूँदें झिलमिला रही थीं।'
4. 'गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से' → 8. 'तेज धार वाले तीर से घायल होकर गिर गया।'
5. 'हुआ विवाद सदय-निर्दय में' → 3. 'दयालु और निर्दयी व्यक्ति में झगड़ा हुआ।'
6. 'कह दे निर्भय, जय हो जिसका।' → 2. 'तू बिना डरे कह दे कि जीत किसकी होनी चाहिए।'
7. 'तूने गुनी कहानी।' → 6. 'तूने कहानी को समझ लिया है।'
8. 'उभय आग्रही थे स्वविषय में' → 1. 'दोनों ही अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए थे।'
9. 'तब उसने, जो था खगभ्रमी — हठ करने की ठानी।' → 10. 'तब उस तीर चलाने वाले ने हठ करने का निश्चय कर लिया।'
10. 'रक्षक पर भ्रमक को वारे न्याय दया का दानी!' → 4. 'न्याय में दया सम्मिलित होती है, न्याय मारने वाले के स्थान पर बचाने वाले का पक्ष लेता है।'

उत्तर: 1→7, 2→9, 3→5, 4→8, 5→3, 6→2, 7→6, 8→1, 9→10, 10→4

प्रश्नावली 1.8 — कविता की रचना (विशेषता-मिलान)

प्रश्न 1

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ दिखाई देती हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए। कविता की पंक्तियाँ: 1. हुआ विवाद सदय-निर्दय में 2. हुई पक्षी की हानी। 3. बेटा, समझ लिया क्या तूने मुझको अपनी नानी? / कहती है मुझसे यह चेटी, तू मेरी नानी की बेटी! 4. तू है हठी मानधन मेरे, सुन, उपवन में बड़े सबेरे 5. कोमल-कठिन कहानी। 6. वर्ण वर्ण के फूल खिले थे, झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे, हलके झोंके हिले-मिले थे, लहराता था पानी। कविता की विशेषताएँ: 1. संवाद दिए गए हैं। 2. पंक्ति के अंतिम शब्द की ध्वनि आपस में मिलती-जुलती है। 3. कुछ शब्द दो बार और साथ-साथ आए हैं। 4. कुछ विपरीतार्थक शब्द साथ-साथ आए हैं। 5. प्रकृति का वर्णन किया गया है। 6. एक ही वर्ण से शुरू होने वाले एक से अधिक शब्द एक ही पंक्ति में आए हैं। 7. प्रश्न-उत्तर दिए गए हैं। 8. शब्द की वर्तनी बदलकर उपयोग किया गया है।

हल

पंक्ति 1 — 'हुआ विवाद सदय-निर्दय में' → विशेषता 4 (विपरीतार्थक शब्द: सदय-निर्दय), विशेषता 6 (सदय-निर्दय, 'स' और 'न' से शुरू)

पंक्ति 2 — 'हुई पक्षी की हानी।' → विशेषता 2 (अंत-तुक: हानी, जानी, बानी, कहानी आदि से मिलती है)

पंक्ति 3 — 'बेटा, समझ लिया क्या तूने... / कहती है मुझसे यह चेटी...' → विशेषता 1 (संवाद), विशेषता 7 (प्रश्न-उत्तर)

पंक्ति 4 — 'तू है हठी मानधन मेरे, सुन, उपवन में बड़े सबेरे' → विशेषता 6 (स-सबेरे; उ-उपवन), विशेषता 2 (अंत-तुक: मेरे, सबेरे, तेरे)

पंक्ति 5 — 'कोमल-कठिन कहानी।' → विशेषता 4 (विपरीतार्थक शब्द: कोमल-कठिन), विशेषता 6 ('क' से शुरू: कोमल, कठिन, कहानी)

पंक्ति 6 — 'वर्ण वर्ण के फूल खिले थे, झलमल कर हिम-बिंदु झिले थे, हलके झोंके हिले-मिले थे, लहराता था पानी।' → विशेषता 5 (प्रकृति-वर्णन), विशेषता 3 (दोहराव: 'वर्ण वर्ण'), विशेषता 6 (झलमल-झिले-झोंके = 'झ' वर्ण; हिम-हलके-हिले = 'ह' वर्ण), विशेषता 2 (तुक: खिले, झिले, मिले)

उत्तर: पंक्ति 1→4,6; पंक्ति 2→2; पंक्ति 3→1,7; पंक्ति 4→6,2; पंक्ति 5→4,6; पंक्ति 6→5,3,6,2

प्रश्नावली 1.9 — कविता में विराम चिह्न

प्रश्न 1

(क) नीचे कविता का एक अंश बिना विराम चिह्नों के दिया गया है। इसमें उपयुक्त स्थानों पर विराम चिह्न लगाइए— राहुल तू निर्णय कर इसका न्याय पक्ष लेता है किसका कह दे निर्भय जय हो जिसका सुन लूँ तेरी बानी माँ मेरी क्या बानी मैं सुन रहा कहानी कोई निरपराध को मारे तो क्यों अन्य उसे न उबारे रक्षक पर भ्रमक को वारे न्याय दया का दानी न्याय दया का दानी तूने गुनी कहानी

हल

विराम चिह्नों सहित सही रूप:
"राहुल, तू निर्णय कर इसका –
न्याय पक्ष लेता है किसका?
कह दे निर्भय, जय हो जिसका।
सुन लूँ तेरी बानी।"
"माँ, मेरी क्या बानी?
मैं सुन रहा कहानी।
कोई निरपराध को मारे,
तो क्यों अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भ्रमक को वारे,
न्याय दया का दानी!"
"न्याय दया का दानी?
तूने गुनी कहानी।"
विराम-चिह्नों की भूमिका: अल्प विराम (,) = थोड़ा रुकना; पूर्ण विराम (।) = पूरा रुकना; प्रश्नवाचक (?) = प्रश्न; विस्मयादिबोधक (!) = आश्चर्य/भाव; उद्धरण चिह्न (" ") = किसका कथन है यह बताना।

उत्तर: "राहुल, तू निर्णय कर इसका – / न्याय पक्ष लेता है किसका? / कह दे निर्भय, जय हो जिसका। / सुन लूँ तेरी बानी।" "माँ, मेरी क्या बानी? / मैं सुन रहा कहानी। / कोई निरपराध को मारे, / तो क्यों अन्य उसे न उबारे? / रक्षक पर भ्रमक को वारे, / न्याय दया का दानी!" "न्याय दया का दानी? / तूने गुनी कहानी।"

प्रश्नावली 1.10 — आज की पहेली

प्रश्न 1

पहेली 1: नानी की बेटी है कौन? मामा की बहना है कौन? भार्या है पिता की कौन? भाभी है चाचा की कौन? (उत्तर कविता में से मिलेगा।)

हल

पहेली में पूछे गए सभी संबंध एक ही व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं:
नानी की बेटी → माँ
मामा की बहना → माँ
पिता की भार्या (पत्नी) → माँ
चाचा की भाभी → माँ
कविता में 'माँ' ही वह पात्र है जिसे सेविका (चेटी) ने 'नानी की बेटी' कहा था।

उत्तर: माँ

प्रश्न 2

पहेली 2: आसमान में उड़-उड़ जाए, तरह-तरह के गाने गाए, पर फैलाकर करता सैर, दो हैं जिसके पर और पैर। (उत्तर कविता में से मिलेगा।)

हल

पहेली में वर्णित विशेषताएँ: आसमान में उड़ता है, गाता है ('गाते थे खग कल कल स्वर से'), पर (पंख) और पैर दोनों हैं।
कविता में 'हंस' का विशेष उल्लेख है — 'सहसा एक हंस ऊपर से, गिरा, बिद्ध होकर खर-शर से'।
'पक्षी' या 'खग' — 'गाते थे खग कल कल स्वर से' — यह पक्षी को इंगित करता है।
कविता के संदर्भ में उत्तर 'हंस' है (जो उड़ता था, पंख और पैर दोनों थे)।

उत्तर: हंस (पक्षी/खग)

प्रश्न 3

पहेली 3: बागों में जो सुगंध फैलाती, फूल-फूल में बसती गाती, हवा-हवा में घुल-मिल जाए, कौन है जो यह नाम बताए? (उत्तर कविता में से मिलेगा।)

हल

पहेली में वर्णित विशेषताएँ: बागों/फूलों में रहती है, सुगंध फैलाती है, हवा में घुल जाती है।
कविता की पंक्ति: 'जहाँ, सुरभि मनमानी' — 'सुरभि' का अर्थ है सुगंध/खुशबू।
इसी पंक्ति में उपवन की सुगंध का उल्लेख है जो फूलों में बसती है और हवा में फैलती है।

उत्तर: सुरभि (सुगंध/खुशबू)